

DPN 5679

Title : चानक रिषि CĀNAKA RIṢI

Run. No. 6370

Cat. No.

Micro. No.

Subject श्री / Śrī / Śrī

Religion : Hindu / Bāuddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 12.0 x 30.5

Folios 7

Lines (in a page) 9

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :



च न गच्छन् कोटिको मुषपनि बुभुक्ष न गच्छन् भावने ॥ ८५ ॥ न देवो वीचते कावे पात्रानेन च मृत्तम ॥ भावेषु बोध्यते देवो तस्मा
 त्भावो महत्तरः ॥ ॥ काठमापनि देवता द्वे न मातो मा पति देवता द्वे न जाहा भावंग उच्छ ताहा देवता छन्दः ॥ ८६ ॥ सीष्या नो देव
 ता चाप्य ज्ञानमा चाप्य देवता ॥ देवता यो धीतामान्ता ब्राह्मणे ज न देवता ॥ ॥ सीष्य को देवता गुरु गुरु को देवता ज्ञान स्वी को दे
 वता आ प्रा गुरु स तार को देवता ब्राह्मण ॥ ८७ ॥ वी प्रपस्य पथा वही एचाप्य पस्य देवता ॥ पथि पस्य पथा माता मीत्र पस्य प
 था सुत ॥ ॥ ब्राह्मण लाई भोगे जन्तो हे नु गुरु लाई देवता जन्तो हे नु आमा लाई धर्ती जन्तो हे नु छो एलाई मीत्र जन्तो हे
 नु ॥ ८८ ॥ गुरु रूनी द्विजातिना वराणां ब्राह्मणे गुरु ॥ पतिरे को गुरु स्त्रीनां सर्वस्या भ्या गत गुरु ॥ ॥ ब्राह्मण को गुरु भ
 ष्मी देवता चारवरा को गुरु ब्राह्मण स्त्री को गुरु आजा गुरु सर्वे को गुरु अति त भ भ्या गत ॥ ८९ ॥ उत म स्या पी
 वरास्य नि को पी ग ह मा गता ॥ पुत्र नियो प स रूपा भ्या गते गुरु ॥ ॥ पुत्राती म द्रा व नि नि य जा ती म द्रा व नि
 फकी ट ट म द्रा व नि पा दे वी पुत्रा गत व वे को गुरु फकी ट ट म ॥ ९० ॥ देवता पुत्र दत्ता क्ता म द्रा व ने न पु
 धा माये

ज प्रम ॥ शुद्ध पुत्रो पका ट ट वी प्रा ना न मी व द न ॥ ॥ भक्षो भावने देवता पुत्रा गत व न द्रव्य ले स्प व क पुत्रा गत उपचार न
 शुद्ध पुत्रा गत नमस्कार ले ब्राह्मण पुत्रा गत ॥ ९१ ॥ धर्म मनुन रत्ना नी सा पो मु त च ब्राह्मण ॥ ब्राह्मण यत्र पुत्यते तत्र धर्म स न
 तन ॥ ॥ राजा को मुत धर्म ब्राह्मण को मुत त प ज ह ब्राह्मण को मा न्य छ ता हा धर्म को वा स छ ॥ ९२ ॥ आचार्य फते धर्म मा चा य
 फल ते च न ॥ आचार्य पूसा प्रोति स्म ना य ह ति त क्षण ॥ आचार्य ले शुची नी ची गरी क धर्म व चा उछ शुची नी ची ग
 री क न धन व चा उछ शुची नी ची गरी क न शु फल हु छ शु ची नी ची गरी क ण भल धन को ना म हु छ ॥ ९३ ॥ भोज्य
 भोजन स की ध्व र ति स की व र स्त्री य वी भवो दान स की ध्व न ले स्प सा प स फल ॥ ॥ जो छे रे घा तु स की ध्व भोजन ड से को हो
 जो छे रे सं भो ग रा र्ह स की ध्व स्या म नि ड से को हो ज म को छे रे च न छ दान ड से को हो पति ठो क ठो रै त प ले पा उ डे न न ॥
 ९४ ॥ वाने चै व बने धर्म म नि ते व नु र्जि वी त ॥ फलाना म पी प छा ना मा न्य न प त न भ वे त ॥ ॥ म नु ध्य ले वा
 न छे रे धी धर्म को वा तो च ना उ नु यो जी व अ ति नी ते हो त म गरी क व वा त मा क्ता का फल य म री न व म्ना भ नि त मी धा

हाहुरै न त सोमनी को पति था हाहुरै न ॥ ६५ ॥ सधम अहतो धर्म को ध्ये नैव हत पत ॥ अहठ बहत जान प्रना देन हत अ
 त ॥ ॥ अहंकारो भया धर्म को नाम हठ को वी भया तप को नाम हठ दृढ न भया ज्ञान को नाम हठ गुमानो भया पद
 को वी भया नाम हठ ॥ ६६ ॥ अति भीहो हो स दुता भुको र सा दौ न ॥ उपति व्याहता कया स्वार्थे पाक कि पाहता
 ॥ ॥ आगो न वन्या पछो हो मगया को ध्ये धि हठ सा की न मे बाया को पनो ध्ये दो हो रो व नी निर्क न क न्या रा न
 गन्या को वी भु फल ह आ फु निमी तेले पक या को पनो ध्ये धि हो ॥ ६७ ॥ दारु हठ्या चो दु खानि वी धन को
 न नानी च ॥ अहठ फल मे ता नि त न्या रा नी वी सी अती ॥ ॥ पु व ज न्या रा न धर्म न गन्या को फल ले ई ह ज
 न्या रा रो हठ वी धन पा दु ह तल धि जे न धर्म गि उ सा ही क ॥ ६८ ॥ उल का ई व धाने सु उमे दा ई व जी ह ॥
 ता ह स ल म नु धा पु प व धर्म व ही क ता ॥ ॥ धर्म मा हा री न भ पा को अ धर्म म नु धे क मृ तो ह ह भ न्या धा न का उ त ना
 न मृ तो धो ला का धर्म ग ता न मृ तो ह ॥ ६९ ॥ ते जे दु ज न सं ल ग भ ज सा धु स मा ग मे ॥ उ ह प र म हा ए त्र स र ति त म

धन

११

नति त्व ता ॥ ॥ अति र म सा रो म नो जानि दु ज न को म ग द्या उ उ सा धु ज न को न ग र र त डो न धर्म ग र ॥ १०० ॥ इति धान
 को सा र स ग रे प्रथ म स त क स ना प्र न ॥ १ ॥ सा स वार्थ व धु बा वी दान न रे द्या नि ति व ह्यु धा ॥ वे रा र्थ च ध धा वी प्रा ड त रा चार च
 धु धा ॥ ॥ जानि ज न को आ बा सा स र र ज न को आ बा नि ति हो ब्रा ह्म रा को आ बा वे र हो इ त ज न को आ बा चार चि वा हो ॥ १ ॥ ए
 ता धर्म नि धर्म ता पा वे पा प स मा ग मे ॥ राजा न दु नि व नि त्या य था राजा त था प्र जा ॥ ॥ ए ता धर्म नि धर्म ता प्र ता प नि धर्म ह ठ
 ए ता पा पि भ या प्र ता प नि पा पी ह त स र्थ नि राजा भ तो ह ठ चारि ह ॥ २ ॥ उ ध म सा र स धे र्म व ल पु डी प र क म वे र त य ज ति कं ती न
 उ दे वो पी स की त ॥ ॥ उ ध म आ ठ व ल पु डी प र क म धी य ज न प ति ह ठे क म रा ह न्या म नु धे व त दे व ता प नि द रा उ क
 ॥ ३ ॥ सा म्य रा ने न भे दे न क मे न च व ले न च ॥ स र्व व लु म हा म क चा त नि पा न र धी प ॥ ॥ म र पा री डी न्या ह प का उ न्या लो
 भ रे पा ड न्या व ल ले ठे च न्या यो च रा म क ना ई राजा ने ना स ग र् ॥ ४ ॥ पा वे त्वा जी ग रो र जी भो जे प री जे ने व ह ॥ सा ल
 त्र वो चारो यो धा र प त प अ ल भ रा ॥ ॥ ए पा उ रे शी त्वा ग न्या उ रा रे वी पु सी ह न्या त वे प री वा र बा रु न्या न री वा

न्या सासुत्रलेवो बहुन्या एणमा सुसेह्या पो पा च ठाक लक्षणा एजना धरुण ॥ १॥ उत्तम प्रणी पाते न भुगे मे
 देन योज पत लुपु मथि पुदानेन समतुप पाक्रम ॥ ॥ वडा पुदुषनाई नमसुका एगरी सुतलिउ मेड गरी भुगे क
 नहा तली नोमीला चणरी क रा हात लिउ परा कमीलाई परा कमगरी हात लिउ ॥ २॥ आलाही ड पर द्या त दी ही ड
 पर स्प च गे ह कुम्भ द्वा गानिः परे भाव च लक्ष्य ॥ ॥ आ फु दो ष पर लाई देवा उ तु हे न पर पा को रोष जान्या को गुप्प गरी ए
 यत को नो सप्त पमा प्रका सगरी क सो न न्या सी सी री तुमा कछुवा ले अंग सु का सर अंग प्रका सगरी के प्रका सगरी
 ॥ ३॥ मनसा चैत यत्का र्य वचनान प्रका सयत् ॥ मन्त्र लक्षणा गुहा ला कार्य सीटी अ ज्ञायते ॥ ॥ मन ले चोता मा
 को केरी काम भया पनि मुख ले प्र का सन गरी मन्त्र जगता गुप्प गन्या को कार्य सीटी ॥ ४॥ उपकार गरी तेन
 सक्ता सक्नु हुन ॥ पारलुगन कर मथेन कन कने व कगठक ॥ ॥ सक्ता हात वात आ ज्ञा काम सीटी हुन्या
 भया सक्नु हुत पना काम ला यर आ ज्ञा काम सा धनु जसुते भीष्मा को काठाले श्री क ठ त सते हो ॥ ५॥

१२

ता सुमुह ॥ ॥ आक्रा सुधेन कुडीन वीचाणु नु मन्त्र को गुजे भोत्र को गुज क म तो छ कति उपता हु छ कति घ च डि
 उ ग वार को का र्क म छ वल कति छ याम वेग जो ले वारि वारि वा गनु ॥ २०॥ सोई डे क व को डे क सी अ च त वारी कु कु ता
 ॥ ॥ वाय सा पंच सी अ च वतु स्वान त्रिनि ग छि माह ॥ ॥ सोई छे उपक १ गुण व क ला छे उपक १ गुण कु घा छे उ चार ४
 गुण का क छे उ पा च १ गुण क क र छे उ छ ६ गुण ग ड छे उ ति २ ३ गुण योग गुण पानि जन ले मो क नु ॥ २१॥ प्रभु त म
 र्क म ल्प वा यान र क त मो छ ति ॥ मवी र्म्ये पु ते का र्क सोई डे क वी चो यते ॥ ॥ ओ फे ले आ र भु ग न्या को का र्क कु लो छ
 त पनि सो नो छ त पनि सो छ गी क न छ ड नु योग सा य क सोई छे उ को लिउ ॥ २२॥ इंद्री पानि तु र्म य स्य व क व त्पा रि ड
 तो न ॥ का र्क क ले प्र प नानि म र्क का र्क नि सा ध यत् ॥ ॥ ज्ञानि जने ले व क ला र्म का र्क को ओ सा म्पा पा म म्पा प च इंद्री
 म व स्य गरी सां भे र नु का र्क को ओ सा प न्या प छे स्स र्क का र्क को सा ध ग नु योग सा य क व क ला छे उ को लिउ ॥ २३॥
 आ गु न्धा ने च पु र्क च सै वी भा ग च व च सु ॥ स्त्री य मा ऋ ऋ नु जो त सी वी च ला र्म कु फ ता ॥ ॥ प्रा त का ल मा उ छ नु मन्त्र सी

20

15

तलडुत ज्ञानिगोत्र मोत वरेक मोत मोतनु अर्धोडिग डोरे मंगवमीयानु पोषासुगण ४ कुषुगडे उकोलीनु ॥२४॥
॥ गुठनेपुन हफ ले काने चाल यमंगदे ॥ अप्रमाडी मुचन च पंचलोष बवा यमात ॥ ॥ गुप्त्र मोत अर्धो मोत मो
गगनु समप्रधी चा होवतु मग्रहगनु धुतेहुनु अहकार नुहुनु चं बहुनु सो पचगण काकेछ उको लिन ॥२५॥ वहा चोले
सेतुव मुनिडासी चचेतन ॥ स्वा मी भक्त चनु ल भव घदे तेम्या ततो गण ॥ ॥ पासा छै बा नु नमया छै ले सावो मान्या चोडे मुतम्या
चोडे ज्ञान्या बामो भक्तो मुह न्या पोछ गण कुरे छ उको लिन ॥२६॥ अविश्रान्तं वेह डारि मोतो क्षं चन न विरति ॥ मुसेतुयो
मोत मस यान मोयं वा छि मात ॥ ॥ नवो सादु भारो वो कन्या जाडो गमी सहन्या थोरै भयापनि सा यो मान्या योतिन गण गडा छे
न निनु ॥२७॥ वो सेतेता गण प्रोका यलुकु यो वी च क्षण ॥ नजिषा सी रोडु सवीन नज प्रभ भविष्यति ॥ ॥ यो वो म २० गण
॥ ॥ नमो का छन सेवो च छन सेना सेव स क ला ई छे छ काली ना हा ग पा पति आ जति त र ला ॥२८॥ असुयो प्रो मनु ध्यानी म सु
चेत सी ॥ पोषा गेप का रेणु उ सी भवेति वीग्रह ॥ ॥ म्या निन वले गेस गन गनु परस्पर उपका ग न्यो छे म्म ग हुडे न

गनु
१४

20

15

गेस गग मोत अपकार ग न्यो छे म्म ग हुडे ॥२९॥ सको डर पथग्रीवा य चरति महारवो ॥ असा व्य तवीन म्यति भैरु ज ईव प
छोन ॥ ॥ यक येत दुई कपाल भयाको भैरु ज नाम चरे ममुद्र कातिर वस्तथ्यो दुई कपाल ते आकुसम हा रु ग ग ग्या
र दुई को ना सभयो ॥३०॥ विसने वीति कुचीति यन के ना पी स म त ॥ अथ नान र गो पु छे उरोडा सर थो यथा ॥ ॥ आप डा प ड
जा हो श्री ग म च द ले वान र सीत मि त्या रो ग रे गा डी को पु छे म मा ड भा ली को स ग ग रे आप डा का त्या थ्या ॥३१॥ दुष्ट
सा म र ति ग न म री वान र वीन अमुत उ व र म्प न सेतु वी च भ सा ग रे ॥ ॥ छै र व तो न्म यो ड यो सा नो ले पानि थला का र
ग उ म की छ क मो भ म्या वान र म वै मी ली थो ग म च द ले अ धी न भ या को स मु द मा सा छु व ना या थ्या ॥३२॥ यु र्य मा त व
यै प च वी रे च च प रे ॥ पौ र क म्प मा ने पी व यं प च तं स तं ॥ ॥ यु धि हो र ग ले दु र्जो च न ला ई म न्या हे दु र्जो च न
तो मो हे रु स पे मा ड हा मो रु पा च भा ई पर म्प री रो च ग रे रे छु ते पाने अ की सी त मु द प न्या प छी सी मी पा च भा ई
ति मी स य भा ई यु कै हु उ प छे ॥३३॥ हो ला भी ला च के म्या गी छ ला वैरी म सा त क प्या न य म म ता या ति य पर य र म्प व

45 40 35 30 25 20 15 10

॥ आक्रुतकुटुम्बजानुभाइसुत्र ताग उछैन क्यानमन्या धर्म अधर्म अकर्म जान्याको हुँछ तवममभेदग
॥ आक्रुतासगह ॥ ३४ ॥ चीनाजरोमनुष्या नां मस्वानामैथुनाहार अमौभणिज्जर म्नावावधनी नामा तपोज्जर ॥ ॥
मनुष्यकोजर धर्माहो चोकोजर मैथुन ओम्बोको जर वी चवाहुनु कपराको जर चाम ॥ ३५ ॥ अध्वाज्जरमनुष्यामां न
मस्वाजीनामरा ॥ अमैथुनजरस्त्री नां मस्वानां मैथुनजर ॥ ॥ बहुतैहाद्यादेयी मनुष्यचादैनुको हुँछ नहीदाया चोरो
चादैपुछो हुँछ संभोगनभया स्वामिचादैनुको हुँछ फेरीसंभोगनपाया चोरोचो हुँछ ॥ ३६ ॥ कषाचलो पराधीन क
षावासानिर वया ॥ अतपुवथिसिपुत्र सर्वकषादरोडता ॥ ॥ परायाका अण लाप्पाको नहुनुकषा आमाकानीरासाभया
कषा पहीनेधनियछो दुरोडभया जतिको कषाकेहीछैन ॥ ३७ ॥ अर्थतोवाधोये सुर्व प्रबामी परस्पवक ॥ जीवितो पीम्
तपंच पंचैतेदुख भागीनी ॥ ॥ भीक्षुकरेनी भुषियरुमी पास्पवक यो पाचजना जोउदेछ तपनि मृतक बरोवरोवामा
हादुषीभर्नु ॥ ३८ ॥ योयत्र नीलपायां ते भुक्तवापीदीनदोने ॥ सत्रत लक्ष तायांति मडी सक्रसमो नर ॥ ॥ जोमनु

मान
१५

राम
१५

अलेपातपाउछमानि नील २ परायाका घरमा जानु लाप्पा हुँछ जस्तो ठूलो आदमी नया पनि अमान हुँछ ॥ ४० ॥
अहीरेण्णमुदामीन गृहीणरसुवर्जित ॥ प्रति कलकलत्रच नरेकस्यापरेवीधी ॥ ॥ सुवन आदीदुख नभयाको गृहस्थ
गाईनभयाको घर प्रीतिनभयाको स्वास्नी प्रतिठोकनकतुल्येहुनु ॥ ४१ ॥ स्थुतजोचो यडाएस लक्ष्मणसळगासी घन
केसी सुदामीता तदातेदुखभागीनी ॥ ॥ श्रीरामचद्रकापीरुगाधुताठीया लक्ष्मणका होउदामहुँध्या सीताका केसव घोरी
या तसथैतेदुख भागीभेयोथ्यो ॥ ४२ ॥ अमौ येनि धनोवीद्वार नमोचेपुत्रवात्रर ॥ अमौ यो नोचवानाणे पुत्रपौत्रप्रति
थ्योत ॥ ॥ गणारिछतपानि कंणालो असुची छोरोनहुन्या मनुष्यपनि असुची छोरोनाति भयापनि वसन् नभया
मो असुची ॥ ४३ ॥ कोमवा सर्वपुन्येते नमरो गुणी देहीन ॥ चाण्डालो दीनरखे यो यम्यास्त्री वीपुलचन ॥ ॥ सर्वोने च
नकोमानगछि नो धर्मिजन जोउछेछतपनि मृतकबरोवर धनचेरे भया बाण्डाजसेतापानि सयैको नेष्टुछर ॥ ४४ ॥
धमाहुपर धर्म धनेसर्वप्रतिशीता ॥ जीवती यनि नोलोके मृता यतो भनानरा ॥ ॥ हुला वनभयाको धम्महो जाहाध

१०

५

0 CMTS. 5 10 15 20 25 30 35

नहतादायेयो कछ तनय विनीजीउजेछ नीर्वनीजभन कतलो छ ॥ ४५ ॥ आतिसपद सायन भतवीयठनो
 म ॥ अनुचवमोखा मेठ सत्यवने सापातित ॥ ॥ बहुतसंपतिभयापदो धार नामना दहहु छः कसोभन्या अगता
 पटकन वज्रलेखसातो डो छ तमो ॥ ४६ ॥ कोमक्षमक्षकोनो म कोमुया नि वरागोना ॥ यस्येभाया त्वम तुष्टा
 कचतसोत्स केश ॥ ॥ सर्वमक्षीकन अभक्षे काहा छ मशरीगीकन छय काहा छ जमका चामनी अक्षीयो
 छो उक्को घर आनहु छो ॥ ४७ ॥ सोमोक्षकषकोनित्य सुखानीत्यमरीगीनी ॥ मायाभनुमनोयस्ये तस्यनिमो वर
 हे ॥ ॥ सर्वयगनपाजन कोहुमाक्षिहुँ दो सुखवायरीगीनाई दुखहुँ नैन जमका जोई ससका वस्ये छ उक्को घर मासडा
 आनहु छो ॥ ४८ ॥ मयप विमिदुख सर्वमितावसंमुख ॥ यत छि सासमा सेनत छेगा सुखदुखयो ॥ ॥ सर्वमंजुदुख पर
 कावस्ये हुनु राजमा दुखमोत्र आयावस्यभयाव दो सुयो दुई सुखदुख कानक्षणाहु ॥ ४९ ॥ सुखम्यानतरहु
 यहु स्याननारि सुख ॥ सुखदुखनननुय्या नी चक्रवती वरतते ॥ ॥ सुखकापछी दुख आउछ दुखकापछी सुख आ

राम

१६

१६